सन्देश की रूपरेखा

पृष्ठभूमि जानकारी सहित

1मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा।

मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?

2मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,

जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

3वह तेरे पाँव को टलने न देगा,

तेरा रक्षक कभी न ऊँघेगा।

4सुन, इस्राएल का रक्षक,

न ऊँघेगा और न सोएगा।

5यहोवा तेरा रक्षक है;

यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है।

6न तो दिन को धूप से,

और न रात को चाँदनी से तेरी

कुछ हानि होगी।

7यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा;

वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

8यहोवा तेरे आने जाने में

तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक

करता रहेगा।

भजन संहिता 121

# स्वागत और परिचय

यदि आपके हाथ में यह पेपर है, तो इसका मतलब है कि आपको बच्चों और युवाओं के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के लिए एक सन्देश सौंपा गया है।

बधाई हो! इस रूपरेखा में, आप अपना खुद का सन्देश बनाने के लिए कुछ पृष्ठभूमि जानकारी और कुछ संकेत पा सकते हैं। आप एक अद्वितीय व्यक्ति हैं और परमेश्वर आपसे एक अद्वितीय तरीके से बात करता है। इसलिए, परमेश्वर जो कह रहा है उसे ध्यान से पढ़कर और सुनकर इस सन्देश को अपना तैयार कीजिये।

परमेश्वर के साथ इस यात्रा का आनंद लें और इससे आशीष प्राप्त करें और दूसरों के लिए आशीष बनें!

# मैं सन्देश कैसे लिखूँ?

* पवित्रशास्त्र की आयतों को प्रार्थनापूर्वक पढ़ने के लिए समय निकालें। इसे कई बार पढ़ें और तीन अलग-अलग अनुवादों या संस्करणों का उपयोग करें। आपका ध्यान किस ओर आकर्षित करता है? आपके पास क्या प्रश्न हैं? आपको क्या चुनौतियाँ मिलती हैं? परमेश्वर आपसे क्या कह रहा है? इन बातों को लिख लें।
* पृष्ठभूमि की जानकारी पढ़ें। यह बाइबल की आयतों की आपकी समझ को कैसे प्रभावित करता है? अपने विचारों को अपने नोट्स में जोड़ें।
* जिन लोगों से आप बात कर रहे हैं, उनके बारे में सोचें। वे कौन हैं? उनकी पृष्ठभूमि क्या है? उनकी उम्र कितनी है? उन्हें क्या चाहिए? आप हमेशा बच्चों और युवाओं के समूह को व्हाट्सएप या मैसेंजर संदेश भेज सकते हैं। उनसे बाइबल की आयतें पढ़ने के लिए कहें और आपको बताएं कि उनके मन में क्या सवाल हैं और उन्हें क्या चुनौतियाँ मिलती हैं। यह जानकारी हमेशा बहुत मददगार होती है, और यह आपको आपके सन्देश के लिए एक अच्छी दिशा देगी।
* आप लोगों को क्या संदेश देना चाहते हैं? इसे एक वाक्य में लिखें।
* अपने सन्देश में एक से तीन बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करें। अपना चुनाव करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें, लेकिन यदि आप भजन 121 पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं तो यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।
  + **हम मदद के लिए कहाँ देखते हैं?** थोड़ा समय निकालकर सोचें कि आजकल जब हम असहाय, दुखी या चिंतित महसूस करते हैं तो हम कहाँ मदद माँगते हैं। हम कभी-कभी आरामदेह भोजन, खरीदारी या टीवी शो देखने की ओर रुख करते हैं। यह केवल अस्थायी राहत देता है, जबकि हमारी सच्ची मदद स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माणकर्त्ता से आती है।
  + **परमेश्वर की ओर देखें।** एक पल रुककर और परमेश्वर की उपस्थिति की तलाश करके हम यह समझ सकते हैं कि परमेश्वर कितना महान है। अगर उसने ब्रह्मांड बनाया है, तो परमेश्वर के लिए कोई भी समस्या बड़ी नहीं है। वह आपके जीवन में निरंतर सहायक है।
  + **दुनिया की ओर देखें।** परमेश्वर की आत्मा उसकी पूरी सृष्टि के माध्यम से काम करती है: प्रकृति और लोग। हो सकता है कि उसने आपको सांत्वना देने के लिए आपके माता-पिता का इस्तेमाल किया हो या आपको खुशी से भरने के लिए आपके दोस्तों का। अपनी दुनिया पर नज़र डालें और देखें कि परमेश्वर आपके जीवन में कैसे काम कर रहा है।

आप इन तीन बिंदुओं को अपने पास मौजूद जानकारी और सवालों से या युवाओं के समूह से प्राप्त जानकारी से समझ सकते हैं।

अपने सन्देश को समाप्त करने से पहले, कुछ ऐसे 'आश्चर्यजनक' सवाल शामिल करें जो लोगों को चुनौती देते हों, जैसे:

* मुझे आश्चर्य है कि इस भजन का कौन सा हिस्सा आपके बारे में है।
* मुझे आश्चर्य है कि इस भजन का कौन सा हिस्सा सबसे महत्वपूर्ण है।
* मुझे आश्चर्य है कि इस भजन में आपको सबसे ज़्यादा क्या चुनौती देता है।

अपने सन्देश को लोगों को अपने तरीके से जवाब देने के लिए आमंत्रित करके समाप्त करें कि परमेश्वर उनसे क्या कह रहा है। क्या परमेश्वर नई प्रतिबद्धता की माँग करता है? क्या परमेश्वर लोगों को कुछ करने के लिए चुनौती देता है? दया आसन के स्थान की व्याख्या करें और लोगों को दया आसन को प्रार्थना, समर्पण या अपनी प्रतिबद्धता के नवीनीकरण के लिए एक स्थान के रूप में उपयोग करने के लिए आमंत्रित करें।

# भजन 121 पर पृष्ठभूमि जानकारी

भजन 121 उन 15 भजनों में से एक है जिन्हें आरोहण के भजन के रूप में जाना जाता है। ये भजन यहूदी तीर्थयात्रियों द्वारा विशेष समारोहों के लिए यरूशलेम की यात्रा के दौरान सुनाए या गाए जाते थे। गीत तीर्थयात्रियों की भावनाओं और विचारों को दर्शाते हैं।

यह भजन यात्रा पर सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर पर भरोसा व्यक्त करता है, और इस कथन के साथ समाप्त होता है कि परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा।

यह बहुत संभव है कि यह उस समय लिखा गया था जब इस्राएली कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे थे, और वे सुरक्षा और शरण की तलाश कर रहे थे। परंपरागत रूप से, भजन 121 का श्रेय दाऊद को दिया जाता है, हालाँकि पाठ में विशिष्ट लेखकत्व स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है।

इस भजन में भजनकार हमें यह दिखाता है कि जब हम ऊपर देखते हैं, तो हम अपनी सीमाओं के बजाय सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उसने हमें अपने वचन में बहुत सारे अद्भुत वादे दिए हैं, और जब हम उसकी ओर देखते हैं, तो हमें उसकी शक्ति और सामर्थ्य और अपने वादों पर खड़े होने की उसकी क्षमता की याद आती है।

# ऊपर देखने के बारे में अन्य कहानियाँ

ऐसे कई अवसर हैं जहाँ बाइबल हमें बताती है कि लोगों को ऊपर देखने के लिए कहा गया था:

1. अब्राहम को ऊपर देखने और सितारों को गिनने के लिए कहा गया था। वह दुखी था क्योंकि उसका कोई बेटा नहीं था, लेकिन परमेश्वर ने उससे वादा किया था कि उसकी संतान के माध्यम से सभी राष्ट्रों को आशीष मिलेगी।
2. जब जंगल में इस्राएलियों पर साँपों ने हमला किया, तो मूसा को एक पीतल का साँप बनाने के लिए कहा गया, जिसे वे अपनी आँखें उठाकर देख सकें और चंगे हो सकें। आप इस कहानी को गिनती 21:4-9 में पढ़ सकते हैं।
3. मजूसी सबसे पहले यीशु को सिजदा करने वाले थे। उन्होंने एक तारे का अनुसरण करके मार्ग तय किया और उन्होंने दुनिया के उद्धारकर्ता को पाया। ऐसा करने के लिए उन्हें ऊपर देखना पड़ा!

क्या आप कभी खो गए हैं? जब आपको नहीं पता कि आप कहाँ हैं और कहाँ जा रहे हैं तो यह एक भयानक एहसास होता है। इसका समाधान है अपनी आँखें ऊपर उठाना और अपने आस-पास देखना। तब आप मील के पत्थर खोज सकते हैं: शायद वहाँ पहाड़ हों जिन्हें आप ऊपर देखकर रास्ता तलाश कर सकते हैं या शायद कोई ऊँची इमारत या पेड़ हो। लेकिन इन चीज़ों को खोजने के लिए आपको ऊपर देखने की ज़रूरत है।

अब्राहम से कहा गया कि वह ऊपर देखे और सितारों को गिनें। अब्राहम चिंतित था क्योंकि उसका कोई वारिस नहीं था और परमेश्वर ने वायदा किया था कि उसके वंशजों के ज़रिए पूरी दुनिया धन्य होगी। ऐसा कैसे हो सकता था जब उसके बच्चे नहीं थे? उस समय यह बिलकुल असंभव लग रहा था, लेकिन परमेश्वर ने अपना वायदा निभाया, अब्राहम पिता बना और, नियत समय पर, अब्राहम के वंश में यीशु का जन्म हुआ।

गिनती 21:4-9 रेगिस्तान में भटक रहे इस्राएलियों की कहानी बयान करता है, जहाँ उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और उन्होंने परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बातें कीं। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उनके बीच विषैले साँप भेजे, जिन्होंने लोगों को डस लिया, जिससे कई लोगों की मृत्यु हो गई। अपनी हताशा में, लोगों ने पश्चाताप किया और मूसा से परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए कहा। परमेश्वर ने मूसा को एक पीतल का साँप बनाने और उसे एक खंभे पर रखने का निर्देश दिया; जिस किसी को भी काटा गया हो, वह साँप को देख सकता था और ठीक हो सकता था।

संकट के समय में, इस्राएलियों को चंगाई पाने के लिए पीतल के साँप को देखने का निर्देश दिया गया था। देखने का यह कार्य विश्वास और समर्पण का कार्य दर्शाता है, जो उनकी चंगाई के लिए परमेश्वर के प्रावधान पर उनका भरोसा रखता है। यह विशेष रूप से संकट के समय में, परमेश्वर की ओर अपना ध्यान केंद्रित करने के महत्व का प्रतीक है।

जिस तरह इस्राएलियों ने ऊपर देखा, हम भी ऊपर देख सकते हैं। परमेश्वर की ओर देखें और यीशु की ओर देखें जिसने हमें नया जीवन दिया! अपनी आँखें सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता पर टिकाएँ, खास तौर पर चुनौतीपूर्ण समय में।

मार्गदर्शन, आशा और उद्धार के लिए ऊपर देखें।

मेजर ऐनी-लीन मबादा द्वारा लिखित